शोध-सार

मेरे शोध का शीर्षक "**गिरिडीह जिला में विकास पत्रकारिता (पर्यावरण चेतना के विशेष संदर्भ में)**" है। एक तो गिरिडीह का निवासी होने के नाते और दूसरे, कुछ सवालों का जवाब तलाशने के लिए मैंने यह विषय लिया। सबसे महत्त्वपूर्ण और बड़ा सवाल मेरे समक्ष यह उठता रहा है कि क्या पर्यावरण चेतना के प्रति विकास पत्रकारिता अपनी भूमिका का निर्वाह कर रहा है? खासकर आज के भूमंडलीकृत और उन्मुक्त बाजार के दौर में पत्रकारिता का जो कायांतरण हुआ है, क्या उसके मद्देनजर हम इस विचार को पाले रखने का जोखिम उठा सकते हैं? इस विषय के चुनाव के पीछे का एक कारण यह भी है कि जहाँ वैश्विक स्तर पर पर्यावरण को लेकर लगातार बहस-मुबाहिसा जारी है, वहीं इस अध्ययन के माध्यम से यह देखना दिलचस्प होगा कि झारखंड जो अपने नाम के अनुरूप जंगलों का राज्य रहा है, क्या अब भी स्थिति वही है या कि स्थितियाँ बदली हैं? क्या झारखंड को अब भी जंगलों का राज्य कहना उचित होगा या देश के बाकी हिस्सों की तरह वहाँ भी धड़ल्ले से जंगलों की कटाई जारी है? अगर हाँ तो स्थितियों के बदलने के पीछे का कारण क्या है? सरकार, वहाँ के निवासी या निजी संस्थाएँ पर्यावरण को बचाने के लिए कोई कदम उठा रही या नहीं। और इन सबमें पत्रकारिता खासकर विकास पत्रकारिता की भूमिका सकारात्मक रही है या नकारात्मक।

इस विषय को पत्रकारिता की नजर से देखने के पीछे का कारण स्पष्ट तौर पर पत्रकारिता और विकास पत्रकारिता के बीच का द्वंद्व रहा है, कि विकास पत्रकारिता को तथाकथित मुख्यधारा की पत्रकारिता से अलग होकर कैसे देखा जाए।

शोध का अध्यायीकरण इस प्रकार किया गया है –

- प्रस्तावना एवं शोध प्रविधि
- झारखंड : एक अवलोकन

- पर्यावरण : एक अवलोकन
- विकास पत्रकारिता : स्वरूप एवं तात्पर्य
- गिरिडीह में पर्यावरण चेतना और विकास पत्रकारिता
- फील्ड वर्क से प्राप्त तथ्यों का संकलन, विश्लेषण एवं प्रस्तुतीकरण
- निष्कर्ष एवं सुक्षाव
- संदर्भ ग्रंथ सूची
- परिशिष्ट

पहला अध्याय 'प्रस्तावना और शोध प्रविधि' के अंतर्गत साहित्य पुनरावलोकन, शोध-समस्या, शोध की प्रासंगिकता (उद्देश्य एवं महत्त्व), उपकल्पना और शोध-प्रविधि की बात की गई है।

दूसरे अध्याय 'झारखंड : एक अवलोकन' के अंतर्गत झारखंड और गिरिडीह का एतिहासिक एवं भौगोलिक अवलोकन किया गया है। साथ ही यह भी देखने की कोशिश की गई है कि झारखंड और गिरिडीह में पर्यावरण चेतना के प्रति वहाँ के समाज की क्या भूमिका है?

तीसरे अध्याय अध्याय 'पर्यावरण: एक अवलोकन' में पर्यावरण के तमाम पहलूओं पर चर्चा करते हुए उसे भारतीय संस्कृति से जोड़ कर देखने की कोशिश भी की गई है। इस अध्याय में भारत में हुए पर्यावरणीय आंदोलन की भी चर्चा की गई है।

चौथे अध्याय 'विकास पत्रकारिता : स्वरूप एवं तात्पर्य' में विकास पत्रकारिता के उदय एवं विकास पर अध्ययन किया गया है। साथ ही विकास पत्रकारिता के स्त्रोत एवं उसकी सीमा को भी रेखांकित करने की कोशिश की गई है।

पंचम अध्याय 'गिरिडीह में पर्यावरण चेतना और विकास पत्रकारिता' के अंतर्गत सितंबर, 2016 में प्रकाशित पूरे माह के दैनिक जागरण अख़बार का अध्ययन किया गया है और यह देखने की

कोशिश की गई है कि पूरे माह में पर्यावरण चेतना से संबंधित कितनी खबरों को प्रमुखता से छापा गया है, और अगर छापा गया है तो उन्हें कहाँ और कितना जगह दिया गया है।

छठे अध्याय 'फील्ड वर्क से प्राप्त तथ्यों का संकलन, विश्लेषण एवं प्रस्तुतीकरण' में शोध कार्य के दौरान भराए गए प्रश्नावली का अवलोकन किया गया है। प्रश्नावली से प्राप्त तथ्यों को तालिका की मदद से विश्लेषित भी किया गया है।

इस शोध से जो कुछ बातें सामने आईं उनका संक्षिप्त ब्योरा इस प्रकार है – जंगलों या खनिज संसाधनों के मामले में झारखंड एक धनी राज्य है। आदि काल से ही भारतीय परंपरा या भारतीय संस्कृति का जुड़ाव पर्यावरण चेतना के प्रति रहा है। वर्तमान में भी भारतीय समाज पर्यावरण चेतना के प्रति सजग है लेकिन निजी संस्थाएँ या सरकारी संस्थाओं का पर्यावरण चेतना के प्रति भूमिका सकारात्मक नहीं है। समय-समय पर पर्यावरण संरक्षण के लिए भारत के विभिन हिस्सों में आंदोलन होता रहा है और इन आंदोलनों का सकारात्मक असर भी रहा है लेकिन पर्यावरण चेतना के प्रति पत्रकारिता की भूमिका संदेहास्पद ही रहा है। पर्यावरण से संबंधित प्रमुख आंदोलनों का शोध अध्ययन में जिक्र भी किया गया है।

भारतीय पर्यावरण आंदोलनों में मुख्यत: तीन वैचारिक दृष्टिकोण देखने को मिलता है – गांधीवादी, मार्क्सवादी तथा उपयुक्त तकनीकी दृष्टिकोण। गांधीवादी दृष्टिकोण पर्यावरणीय समस्याओं के लिए मानवीय मूल्यों में हो रहे आधुनिक उपभोक्तावादी जीवन शैली को जिम्मेदार मानते हैं। इस समस्या की समाप्ति के लिए वे प्राचीन भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना करने पर जोर देते हैं। यह दृष्टिकोण पूर्व औपनिवेशिक ग्रामीण जीवन की ओर लौटने को आह्वान करता है जो सामाजिक तथा पर्यावरणीय सौहार्द पर आधारित था। दूसरी ओर मार्क्सवादी दृष्टिकोण में पर्यावरणीय संकट को राजनीतिक तथा आर्थिक पहलुओं से जोड़ कर देखा जाता है। इनका मानना है कि समाज में संसाधनों का असमान वितरण पर्यावरणीय समस्याओं का मूल कारण है। अत: मार्क्सवादियों के अनुसार पर्यावरणीय सौहार्द पाने के लिए आर्थिक समानता पर आधारित समाज की स्थापना एक अनिवार्य

शर्त है। तीसरी ओर उपयुक्त तकनीकी दृष्टिकोण औद्योगिक और कृषि, बड़े तथा छोटे बांधों, प्राचीन तथा आधुनिक तकनीकी परंपराओं के मध्य सांमजस्य लाने का प्रयत्न करता है। यह दृष्टिकोण व्यवहारिक स्तर पर गांधीवादी तकनीकों तथा रचनात्मक कार्यों से बहुत मेल खाता है। इन तीनों दृष्टिकोणों की एक झलक हमें चिपको आंदोलन में देखने को मिलती है।

विकास योजनाओं के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पक्ष विकास पत्रकारिता के अधीन आ जाते हैं। इस तरह पत्रकारिता की यह विधा दूसरी विधाओं से कम समाजोपयोगी नहीं है, हालाँकि अभी तक इसकी उपेक्षा होती आ रही है। विकास पत्रकारिता की प्राथमिकता जन सामान्य तक केवल सूचनाएँ संप्रेषित करना ही नहीं है, बल्कि उन्हें शिक्षित कर विकास समस्याओं के प्रति जागरूक बनाना है। आकाशवाणी के बाद सरकारी माध्यमों में दूरदर्शन का दूसरा स्थान आता है। दूरदर्शन ने माध्यम विकास को गति प्रदान करने के लक्ष्य से ग्रामीण क्षेत्रों पर विशेष बल दिया है। कृषि तथा उससे संबंधित अन्य विषयों को प्राथमिकता देकर दूरदर्शन ने विकास को गति प्रदान करने के उदेश्य से विकास संबंधी कार्यक्रमों पर विशेष ध्यान दिया है।

गौरतलब है कि विकास समाचारों के अनुसंधान का कार्य श्रमसाध्य है, उसमें कड़ी मेहनत करनी पड़ती है जो आज के आराम पसंद संवाददाता प्रायः करना नहीं चाहते। विकास समाचारों की खोजबीन के काम पर होनेवाला भारी खर्च भी विकास संवाददाता के काम में बाधक बनता है। पत्र-पत्रिकाओं के प्रबंधक ऐसे कार्य पर खर्च करने से प्रायः कतराते हैं, शायद इसलिए भी ऐसी खबरों के पाठक कम होते हैं। विकास पत्रकारिता का क्षेत्र अभी भी काफी पिछड़ा हुआ है। पर्यावरण चेतना के प्रति स्वतंत्र मिश्र का काम सराहनीय है। गिरीडीह जिला में पर्यावरण चेतना के प्रति विकास पत्रकारिता की भूमिका पर कई सवाल उठते हैं। पत्रकार और पत्रकारिता को पर्यावरण पत्रकारिता या विकास पत्रकारिता की ओर उन्मुख चाहिए।